THE MINISTER OF STEEL AND MINES (SHRI N. SANJIVA REDDY): (a) Government are aware that there has been shortage of billets and re-rollable scrap lor supply to re-rolling mills during the past few months.

(b) Some of the main producers who have not produced adequate quantities of billets in the past few months are being pressed to improve their production and licences are also being issued to certain parties to set up units for production of billets by using the electric furnaces.

हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन लिमिटेड, रांची द्वारा निर्माण सम्बन्धी साज-सामान की खरीद तथा किराये पर दिया जाना

*२६५. **श्री भगवत नारायण भार्गव :** क्या **उद्योग तथा संभरण** मंत्री प्राक्कलन समिति (१९६३–६४) के हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन लिमिटेड, रांची के सम्बंध में ५१वें प्रतिवेदन के पृष्ठ ४१–४२ पर पैरा १०३–१०५ को देखेंगे जिनमें यह कहा गया है कि कारपोरेशन ने निर्माण संबंधी कीमती साज-सामान खरीदा और ठेकेदारों को किराये पर दिया, जब कि संविदा-पत्रों में यह अनुबंध था कि ठेकेदार स्वयं अपना ही साज-सामान लायेंगे, और यह बताने की कृपा करेंगे कि इसके लिए जिम्मेदार लोगों के विरुद्ध सरकार ने क्या कार्यवाही की है?

f [PURCHASE AND HIRING OUT OP CONSTRUCTION EQUIPMENT BY H.E.C. LTD., RANCHI

•265. SHRI B. N. BHARGAVA: Will the Minister of INDUSTRY AND SUPPLY be pleased to refer to paras 103-105 at pages 41-42 of the 51st report of the Estimates Committee (1963-64) relating to Heavy Engineering Corporation Limited, Ranchi wherein it is stated that the Corporation purchased and hired out costly constructs] English translation.

tion equipment to contractors at uneconomic rates although it was stipulated in the contracts that the contractors would bring their own equipment and state the action taken by Government against those responsible in the matter?]

उद्योग तथा संभरण मंत्रालय में भारी इंजीनियरी के मंत्री (श्री टी० एन० सिंह) : सदन की मेज पर एक विवरण रखा जाता है।

विवरण

हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन के विभागीय कार्य के लिये अपेक्षित निर्माण संबंधी साज-सामान के मूल्य का अनुमान २.७६ करोड़ रुपये लगाया गया था। इस साज-सामान में से ३१–३–१९६४ तक १·७५ करोड़ रुपये के मूल्य का सामान खरीदा गया था। इस साज-सामान का मुख्यत: इस्तेमाल उस विभागीय कार्य में किया गया था जिसका कारपोरेशन की विभिन्न यूनिटों में संयंत्र और मशीनें लगाने से प्रमुख संबंध था। चूंकि संयंत्र और मशीनें लगाने का काम बहुत सी अन्य बातों —जैसे विभिन्न शापों का निर्माण, मशीनों आदि के आने पर निर्भर करता है, इसलिये हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन के लिये प्राप्त निर्माण-संबंधी मशीनों का पूरा उपयोग करने में कुछ समय का अन्तर पड़ गया था। केवल ऐसे ही कुछ मामलों में ये मशीनें ठेकेदारों को किराये पर दे दी गई थीं; विशेषकर उस समय जब कि उनका काम पिछड़ गया था और ऐसा मुख्यत: असैनिक निर्माण-कार्य को शीघ्रता से करने की दृष्टि से किया गया था। किराये की दरें किराये पर दिये गये साज-सामान में हुई टूट-फूट, मरम्मत और उनकी देख-रेख पर हुये खर्च आदि को ध्यान में रख कर निश्चित की गई थी।

ऐसा जान पड़ता है कि कारपोरेशन प्राक्कलन समिति के सम्मुख अपनी स्थिति की संतोषजनक व्याख्या न कर सका, जिसके

कारण निर्माण-संबंधी सारे साज-सामान की देख-रेख और टूट-फूट की राशि इस सामान के केवल एक बहुत थोड़े भाग का इस्तेमाल करने के लिये ठेकेदारों से वसूल की गई राशि के रूप में दिखाई गई है ।

प्राक्कलन समिति की अलग से सही स्थिति स्पष्ट की जा रही है ।

t[THE MINISTER OF HEAVY ENGINEERING IN THE MINISTRY OP INDUSTRY AND SUPPLY (SHRI T. N. SINGH) : A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

The value of construction equipment required for the departmental work of the Heavy Engineering Corporation was estimated to be Rs. 2·79 crores. Out of this, equipment worth Rs. 1-75 crores was purchased up to 31-3-64. This equipment was primarily used for departmental work mainly connected with erection of plant and machinery in various Units of the Corporation. As erection of plant and machinery is dependent on so many other factors like construction of various Shops, arrival of machinery etc., there was some gap during which construction machinery acquired by Heavy Engineering Corporation was not in full use. Only in such few cases they were hired out to the Contractors particularly when their work 'was found to be lagging behind and mainly with the view of speedy execution of civil construction work. The rates of recovery of hire charges were fixed after taking into account the depreciation, repair and maintenance charges, etc., on the equipment hired out.

It appears that the position could not be explained satisfactorily by the Corporation to the Estimates Committee on account of which the amount of maintenance and depreciation charges for the entire lot of construction equipment has been compared with the hire charges recovered from the Contractors for using a very small portion of this equipment.

The correct position is being explained to the Estimates Committee separately.]

†यू० के० से टेक्सटाइल मशीनरी का आयात

*९५. **श्री राम सहाय** : क्या **वाणिज्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन द्वारा यूनाइटेड किंगडम से आयात की जाने वाली टेक्सटाइल मशीनरी के कब तक आ जाने की आशा है ; और

(ख) आयात की गई मशीनरी का किस प्रकार से उपयोग करने का विचार है ?

tftIMPORT OF TEXTILE MACHINERY FROM U.K.

•95. SHRI RAM SAHAI: Will the Minister of COMMERCE be pleased to state:

(a) when textile machinery to be imported by the State Trading Corporation from United Kingdom is exr-pected to arrive; and

(b) how the imported machinery is proposed to be utilised?]

वाणिज्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री एस० बी० रामस्वामी) : (क) संविदा की तारीख से ६ से २१ महीने के भीतर ।

(ख) इसकी स्थापना इस प्रकार की जायेगी :—

(१) निर्यात अभिमुख कताई-बुनाई मिलों तथा निर्यात करने वाली मिलों में :

t[ ] English translation. tPostponed from the 10th Sept,